एक तोला, एक दर्पण

सुभाष काक

सुभाष काक वैद्युत अभियांत्रिकी के विद्वान प्रोफेसर होते हुए भी भारतीय विद्या में निपुण और साहित्य एवं संस्कृति के सहृदय मर्मज्ञ हैं। भारत के सुषमा-ललाम कश्मीर प्रदेश में जन्मे, उसकी स्मृतियों की धरोहर लिए अब वह विदेश में प्रवासी हैं। वड्सवर्थ की तरह उनका कविहृदय प्रकृति की सौन्दर्य-सम्पदा से विकसित और सुशिक्षित है।

हिन्दी साहित्य जगत् में वे एक नया पर समर्थ हस्ताक्षर प्रस्तुत करते हैं। उनकी स्फुट कविताएँ हिन्दी और अंग्रेजी में अनेकत्र प्रकाशित हुई है। अंग्रेजी में कविता संग्रह भी प्रकाशित है।

© : सुभाष काक

प्रथम संस्करण : १९९९

मूल्य : एक सौ रुपये

प्रकाशक : राका प्रकाशन
४० ए, मोतीलाल नेहरु रोड
इलाहाबाद - २

मुद्रक : केशव प्रकाशन
सिविल लाइन्स, इलाहाबाद

अनुक्रम

प्राग्वाचिक / ७
एक ताल, एक दर्पण / ११
मन्दिर की सीढ़ियाँ / २१
स्मृति की भूलभुलैया / २६
स्वाहागुरु / २८
चाँदनी की राख / २९
हृदय और नेत्र / ३०
पुष्प खिलेंगे / ३१
एक स्वर / ३२
आज और कल के बीच / ३३
नदी के उस पार / ३५
निर्वासन / ३८
श्रीनगर में हिमपात / ४०
अपराजिता / ४२
तुलमुल में प्रीतिभोज / ४४
उधमपुर में सवेरा / ४५
सात पुल / ४७
नगर के पीछे पहाड़ी / ४८
घाटी में टूटा विमान / ५०
बादल फूटा / ५१
पुष्प और अग्नि / ५२
प्रतीक्षाकक्ष / ५३
उड़ने का भय / ५४
हिमानी आँधी / ५५
नदी और विदूषक / ५६

नगर के तंतु / ५७
शिशिर और यक्ष / ५९
डूबने से बचना / ६१
रजोमेघ / ६३
स्पर्श / ६४
पञ्चालदेव / ६५
चीत्कार और सिसकियाँ / ६७
ताल / ६९
प्रभात / ७०
संस्कार / ७१
दो पक्षी / ७२
प्रहेलिकायें / ७३
हमारा देश / ७४
सीमा / ७५
मृत्युशय्या / ७६
प्रेम की आकांक्षा / ७७
मेरा जीवन / ७८
दर्पण / ७९

प्राग्वाचिक

सुभाष काक वैद्युत अभियांत्रिकी के विद्वान प्रोफेसर होते हुए भी भारतीय विद्या में निपुण और साहित्य एवं संस्कृति के सहृदय मर्मज्ञ हैं। भारत के सुषमा-ललाम कश्मीर प्रदेश में जन्मे, उसकी स्मृतियों की धरोहर लिए अब वह विदेश में प्रवासी हैं। वड्र्सवर्थ की तरह उनका कविहृदय प्रकृति की सौन्दर्य-सम्पदा से विकसित और सुशिक्षित है।

हिन्दी साहित्य जगत् में वे एक नया पर समर्थ हस्ताक्षर प्रस्तुत करते हैं। उनकी स्फुट कविताएँ हिन्दी और अंग्रेजी में अनेकत्र प्रकाशित हुई हैं। अंग्रेजी में कविता संग्रह भी प्रकाशित है। प्रस्तुत संग्रह हिन्दी में उनकी पहली व्यवस्थित और संगृहीत कृति है। उनकी भाषा और शैली आन्तरिक गाम्भीर्य को सरल प्रासादिकता से प्रस्तुत करती है जैसी कभी शेषनाग सरोवर का सलिल। उनकी भाव-भूमि स्मृतियों की पच्चीकारी से अलंकृत है। कश्मीर, विगत कश्मीरी जीवन, बीते हुए शैशव और पारिवारिक अनुभूतियों की स्मृति से ये कविताएँ रसार्द्र हैं। उनके बिम्ब प्रकृति और सहज मानवता से बराबर जुड़े रहते हैं। इन कविताओं को पढ़ते हुए ऐसा लगता है कि न सिर्फ कवि एक बीते शैशव और सुदूर प्रदेश की स्मृतियों से अभिभूत है बल्कि अपनी सांस्कृतिक धरोहर की बदलती परिस्थिति की आशंकाओं से भी चिन्तित है।

कश्मीर को बहुतों ने स्वर्ग कहा है, पर कवि के लिए वह उसका निजी विलुप्त स्वर्ग है—

जहाँ से हम निर्वासित हुए हैं—
वही सर्वश्रेष्ठ स्वर्ग है।
* * *
तीर्थ ध्वस्त पड़े हैं
कैसे नदी के पार पहुँचूँ
घर देख पाऊँ
जहाँ दादा का जन्म हुआ।
किसे मालूम था तब
श्रीनगर में तूफान आयेगा.....
मैं लौट न पाऊँ.....
राक्षस चाहते हैं कि हम
अपना अतीत भूल डालें।
* * *
एक पुराना संगीत
कानों में गूँजा—
यह ताल ही दर्पण है

स्मृतियों से परे कवि को भविष्य की चिन्ता है—

सात पुल
भूत और भविष्य के मध्य हैं
जो बीता है
वह केवल एक संवेदन है
एक संकेत है

प्रकृति की प्रतीति इतिहास की प्रतीति से जुड़ी हुई सामने आती है—

धीरे-धीरे नगर का अधिक भाग स्पष्ट हुआ
सरोवर का अधिक जल
वितस्ता का कुण्डलित पथ
* * *
नगर की हिंसक ज्वाला
गयी नहीं थी तब
* * *
यारबल देखे वर्ष हो गये
कैसे हम नदी पार कर लौटेंगे

मुझे पूरा विश्वास है कि सुभाष जी की कविताएँ किसी भी निष्पक्ष कविता प्रेमी को आनन्दित करेंगी और प्रवर आलोचक उन्हें एक मूल्यवान उपहार मानेंगे।

यह संभव है कि कुछ आलोचना-कर्म-व्यवसायियों को इन कविताओं में उस प्रकार की भावगत और अभिव्यक्तिगत जटिलता अस्पष्टता और अन्तर्विरोध न मिले जिसके वे आजकल अभ्यस्त हैं। किन्तु मुझे इनकी भावतन्मय सरलता उनका विशेष गुण प्रतीत होता हे। उनकी कविताएँ अनुभव रस से सिक्त हैं, वे उलझी बौद्धिकता और आन्तरिक विसंगतियों से दुर्बोध नहीं हैं। उनका स्वागत होना चाहिए।

गोविन्द चन्द्र पाण्डे

इलाहाबाद

एक ताल, एक दर्पण

जैसे एक फूल की गिरती पंखड़ी
शाखा को लौटे
ऐसी थी तितली की उड़ान।

शरद की झंझानिल में
व्याघ्र और हरिण
एक साथ ठिठुर रहे थे।

मध्याह्न की अचानक गर्मी में
जल से भाप उठी,
एक पुराना संगीत
कानों में गूँजा—
यह ताल ही दर्पण है।

झांझा अति पीड़ित,
तितली नहीं बनेगा।

फुलवारी के शृंगार
और पक्षियों के कोलाहल के मध्य
देखो पीपल का धैर्य।

लगता है कि तरबूज को नहीं मालूम
कि रात तूफान आया था।

चाँद को देखते देखते
मेरी गर्दन दुखने लगी।

वसंत का पहला गीत गाते
कितना शर्मीला यह पक्षी लगता है।

कितने तीर्थ मैं गया
पर आकाश गंगा अब भी
उतनी ही दूर है।

यात्रियों के साथ पक्षी भी
डेरा डाले।

यह पुरुष बैठे करे ध्यान—
कितना कठोर परिश्रम!

आज डाकू साधूवेश में हैं
और कवि ने
तलवार बाँधी है।

मैं हंस से खेलने चला
पर उसकी अचानक उड़ान से
डर गया।

चिड़ियाघर के पिंजरे का भालू
मुझे लगा
वह मेरा भाई है।

दर्पण में मेरा रूप
धुंधलाता है।

आज इस रात इतनी देर
मेरे साथ कौन यह जगा है?

यह मैना ऐसे गा रही है
जैसे पिंजरे में है ही नहीं।

यह विषैले छत्रक
कितने सुन्दर लगते हैं।

पक्षी की कूक सुनकर
पानी में चन्द्रमा हिला।

चन्द्रमा दौड़ रहा था
एक मेघ से दूसरे की ओर।

अरुषी ने ओस के बिन्दु को
अपनी अंगुलियों में पकड़ना चाहा।

कितना सुन्दर है
पतझड़ की शाम का चन्द्रमा
इस मेरे जीवन की शाम को।

तितलियाँ इधर-उधर भाग रही हैं
गए हुए वसंत को ढूँढतीं।

अब पाला क्यों और भीषण पड़ा
अब तो पुष्प नहीं खिलेंगे।

काश एक गिरती बर्फ में
तितलियाँ उड़ रही होतीं।

कैसा गाती हैं तितलियाँ ?

चोर ने हार चुरा लिया
पर चन्द्रमा मेरी खिड़की के पास
से नहीं भागा।

यह मछलियाँ
गिरते फूलों के डर से
चट्टान के पीछे छुप रही हैं।

इस श्मशान में
कितनी सुन्दरियों की अस्थियाँ हैं।

गर्मी की रात थी
पिंजरे का एक भी पक्षी
नहीं सोया।

कितना सुन्दर और स्वच्छ है
यह शरद चन्द्रमा
पर हमारी खिड़कियाँ
बंद हैं।

अरुषी बहुत रोई
पूर्ण चन्द्रमा के लिए।

अभिनव का हृदय बहलाने
मैंने पतंग उड़ाई।

तूफान के झोंके पर बैठी
मंदिर की घंटी की आवाज
पहुँच आई।

बिन जाने कैसे समझूँ ?
पुस्तकालय के ग्रंथ
मैं लौटाऊँगा।

पतंग पर अब भी किरणें हैं
जब ताल पर अंधेरा हो चुका है।

इस तूफान में कुत्ते
गिरते पत्तों पर भौंक रहे हैं।

यह प्रकाश
बिम्ब बिम्ब का प्रतिरूप है
रूप रूप का प्रतिबिम्ब है।

सुन्दरता क्या निहारूँ
वसंत के पग निरंतर दूर हो रहे हैं।

कौवे इतना शोर मचा रहे हैं
कि इस कोकिला को सुन न पाएँ।

माँ की गोद में सुरक्षित
भिखारी बच्चे को नहीं मालूम
कि ठंड कितनी है।

यह चिड़िया घोंसला बना रही है
इस पेड़ पर,
कैसे बताएँ
कि यह पेड़ कटने वाला है।

कितना उदास लगता है
पिंजरे का पक्षी
जब वह तितलियों को देखता है।

जुगनू रोशनी दे रहे हैं
बच्चों को
जो उन्हें पकड़ना चाहते हैं।

नाग का जल कितना निर्मल है
मैं पाँव कैसे धोऊँ ?

अनजान कि वसंत जा रहा है
तितली घास पर सो रही है।

वह मेरे पास से गुजरा
पर सवेरे के कुहरे में
मैं उसे पहचान न सका।

हरिण स्तम्भित हुआ
उछलते व्याघ्र की
भीषण सुन्दरता देख कर।

आतिशबाजी के बाद
दर्शक लौट गए—
कितना वीराना है।

मकड़े के जाल से
मृत तितलियों के पंख
लटक रहे हैं।

उद्यान में प्रत्येक पेड़ का
भिन्न नाम है।

पतङ्ग धरती पर गिरा
निरीक्षण से ज्ञात हुआ
इसमें आत्मा नहीं।

मधुमक्खी बार-बार
देवता की मूर्ति पर
वार कर रही थी।

कितने मूर्ख हैं यह लोग
इशारों का दाम करते हैं।

गङ्गा की लहरों पर
चन्द्रमा चित्र बना रहा है।

यह पक्षी हम पर हंस रहे हैं
कि हमारे पास समय नहीं।

चांदनी में
सब वस्त्र सुन्दर लगते हैं।

खण्डहर में मैंने
कई फूल उगते पाए।

रुई का फेरीवाला
गर्मी से बहुत पीड़ित है।

मेढक ने पत्ते पर बैठ
कुल्या को पार किया।

यदि यह पपीहा पौधा होता
लोग इसके गीत काट लेते
रेशमी रूमालों
या ग्रंथों के पन्नों के बीच
सुखाने के लिए।

आज भी
सूर्यास्त हो गया
फुलवारी में
बेचारे तारे
शरद के चाँद से
हारे

तूफान के शोर में भी
मैंने चिड़िया की पुकार सुनी।

सर्दी की ठंडी फुहार
मुझे मिलने से पहले
फुलवारी हो आई थी।

भूर्जतरु इस भीषण वर्षा में
सोए पड़े हैं।

पपीहा कूक कर रहा है
पर उससे मिलने
कोई नहीं आया।

शाम हो चली है
पर मेरी बेटी
अकेले चुपचाप
खाना खा रही है
रसोई में ।

कमल अति सुन्दर है
पर नाविक
बहिरा है ।

कारागार के आंगन में भी
पुष्प खिलते हैं ।

थक गया हूँ
क्या मेरी नींद में
और पुष्प खिलेंगे ।

मेरे पूजन काल में
पुष्प मुर्झा गए ।

कोमल फूलों पर
वर्षा कितने जोरों से गिर रही है ।

शरद की
चांदनी में
मेरा बालक
मेरी गोद में नहीं ।

पड़ोसी के घर है
चारों ओर ऊँची दीवार
न वह देख पाता है नदी
न ही दूर पहाड़ी ।

रात के अंधेरे के तम्बू
में छिप गया है यह ताल
पर हंस का स्वर
कितना कोमल और श्वेत है ।

मन्दिर की सीढ़ियाँ

मेरे समछाया के आंगन में
पपीहे ने पहला गान किया।

मालूम नहीं कहाँ से यह गीत
धरती पर गिर आया।

मचान से देखते हुए
यह व्याघ्र कितना सुन्दर लगता है

तितली मेरे हाथों में
देखते देखते मर गई।

देखो ! यह पर्वत
कम्बल के नीचे सोया है।

मुझे मालूम नहीं था
कि आंगन में पुष्प खिले थे—
और फिर हिमपात हुआ।

मैं पुष्पों को चुनना नहीं चाहता
पर घर कैसे लौटूँ
चुने बिना ?

पता नहीं किन पुष्पों की
सुरभि फैल गई है इस आंगन में।

बादल कभी, कभी
चन्द्रमा को ढक लेते हैं
ताकि हमारी निहारती आँखें
थक न जाएँ।

देखो इस पत्ते से गिरकर
जलबिन्दु कैसे विभाजित हुआ।

पपीहे की चीख सुनकर
मुझे स्वर्गवासी दादा की
याद आई।

चाँद की कितनी समदृष्टि है।

नववर्ष के उत्सव के लिए
मेरे पास नव वस्त्र कहां ?

ओठ ठिठुरते हैं
इन हवाओं में।

इस चांदनी रात में
केवल मेरी छाया मेरे साथ है।

तूफान की हवा बन्द हो गई।
पर उसका चीत्कार अब
नदी के कल-कल में है।

मन्दिर की घण्टी में
मकड़ों ने जाल बनाए हैं।

हाय, इस पुष्प वाटिका में
लोग रंगे चश्मे पहने हैं।

मेरी कोई प्रियतमा नहीं
तो मैं फिर क्यों कविता करूँ।

उड़ान भरने से पहले यह राजहंस
बत्तख जैसा लग रहा था।

अद्भुत सुन्दरता के पुजारी हैं वह
जो वीरानों में खोजे हैं खुशी।

सूर्य चढ़ता गया
नई कलियां फूटती गईं।

वह सब सो रहे हैं—
क्या उन्होंने बच्चों को
सब कहानियां सुनाई?

अभिनव अर्जुन
केवल तीर चलाता है।

अरुषी रो रही है
सखी से कैसे मिले।

एक और सावन ढह गया
सब मित्रों के केशों में
रंग है अब।

वर्षा की पहली रात में ही
मेरी छुरी कलंकित हो गई।

मैं महलों में भी सोया हूँ
वहाँ भी बहुत सन्नाटा था।

इस मरुस्थल में ऊँट
कितनी भक्ति से भार
ढो रहे हैं।

पतझड़ के तूफान में
काकत्रासक तृणपुरुष
सबसे पहले उड़ गए।

भिखारी के आंगन में
कितने सुन्दर फूल खिले हैं।

कोयल की उड़ान देखकर
श्येन को याद आया
कि वह भी उड़ सकता है।

आज दिन की धूप में, प्रियतम
तुम्हारा छत्र कितना छोटा है।

शाम की समीर में
कितना सन्तुष्ट है मकड़ा
अपना जाल बुनता हुआ।

पेड़ ऐसे झूल रहे हैं
जैसे चित्र बना रहे हों।

सूर्य के ३३९ गीत सुनते
मैंने प्राचीन मन्दिर की
१०८ सीढ़ियाँ चढ़ीं।

स्मृति की भूलभुलैया

वह फूल जो सेतु की फुलवाड़ी में खिले
हवाओं ने दूर बिखरा दिये हैं।

आग गिरी पहले
फिर निरन्तर वर्षा
कंकड़ों के बीच ही
कुछ बचाव है।

प्राचीन आंगन में भूत मंडराते हैं।
उन्हें ही याद है
वर्षों का अन्याय
देवताओं का अपमान
सज्जनों का संहार
विध्वंसित यज्ञ।
आततायियों का कालापन
हमारे मन में भी चढ़ गया।

हमारी निष्ठा झूठी थी
हमने सामन्तों की दासता की
आँखों पर पट्टियाँ बाँधीं।
कई चांद उगे
वसन्त का नाम नहीं।
पर निष्ठुर कालचक्र
आगे अवश्य मुड़ेगा।

क्या प्रेम लौटेगा फिर
आँखें मिलेंगी और,
एक नया जन्म होगा?

स्वाहागुरु

शब्द गुरु है
नाम से आगे बढ़कर
सीमा स्पष्ट होकर
वृत्त में उगता है वृक्ष
उसकी समछाया में ही है शिव।

शब्द शक्ति है
इसकी माया तले
मिलेगा सत्गुरु
स्वाहागुरु।
सु अह गुरु।

चान्दनी की राख

आज फिर ढक गया है चान्दनी की राख से
यह घर और अब टिमटिमाते दिये से दूर
उड़ रहे हैं पतङ्गे जैसे अन्धेरे की तलाश में
ढूंढते इक अन्त जो जल जाने से मुश्किल हो ।

हृदय और नेत्र

यह हृदय मेरे नेत्रों को धुंधला रहा है
जैसे भाप दर्पण को सर्दी में मैला करती है
शीशे को पोंछने वाले मन के हाथ कहाँ

स्मृतियाँ क्या हैं बांधने के लिये हमको
फैलती हैं यूँ कि स्वयं बंध जाती हैं
पर अन्त में बोझ से थककर
इनका आतंक भी शिथिल हो जाता है

हृदय समय को कैसे जोड़े अब क्या अन्तर ?

पुष्प खिलेंगे

यह पुष्प खिलेंगे यही तो दुख है

कलियाँ ही रह जातीं तो न मुर्झाती
अब कदमों की धूल में मिट जायेंगे

प्रशंसा हो भेंट बन जायें
इसके लिये ही नहीं उगते हैं सब फूल
निर्जन चट्टानों में भी यह उगते हैं।

एक स्वर

आज एक स्वर फिर ढूँढता है यह राग
जैसे तितली की तरह उड़ने का मनोरथ हो
और कितने सावन इसको तपना होगा
कोश की गहराई में बुनना होगा
अपने ही धागे में न बंध जाये यह राग
स्वर पाने से पहले ही मर जाये न यह राग ।

आज और कल के बीच

हर छाया में मैं शकुन ढूँढता हूँ।

समय का क्रम ऐसा था,
जैसे बाघ की तीव्र छलांग
या मृग की उन्मत्त दौड़,
और अब इसके पंख
तितली की तरह थरथराते हैं।

मैं पल के आवरण में ही खो गया।
फिर भी मैंने नीले आकाश को देखा
और एक, ऊँचे नग्न पर्वत को
जिसके आगे एक गहरी दरार थी,
और दूसरी ओर एक हरित पथ
पीपल की कतारों से आंचलित
एक वक्रा नदी की ओर जाता हुआ।
इस पथ पर मैं दोनों दिशाओं
की ओर चला हूँ।

यह पल मुझे दूर ले जाता है :
मेरे पिता मेरी अवस्था के हैं।
अपने बालपन से मैं
अपने बच्चों को देखता हूँ।

रास्ते उभरते हैं
और फिर मिट जाते हैं,

प्रतिछाया में ही हम सिमट जाते हैं,
भूख और तृष्णा से पीड़ित
हम छटपटाते हैं।

अपरिमित को एक में पाया
और एक को खण्डित देखा
भयभीत,
मैंने धरती को कदमों से मापा।
विचित्रता कुछ दूर हुई।

नदी के उस पार

जीवन एक यात्रा है। इस में अपना देश छोड़ना कितनी पीड़ा देता है! पर इससे भी अधिक पीड़ा होती है अपने आन्तरिक केन्द्र से धकेले जाने पर। कभी तो हम इस जादुई क्षेत्र को स्वयं छोड़ देते हैं और फिर वापस पहुँचने का मार्ग ढूँढ़ नहीं पाते। कभी गहरा रोष हमें अंधा बना देता है।

सन् १४९२ में कोलम्बस भारत की खोज में अमेरिका पहुँचा। यह सोच कर वह अपने लक्ष्य पहुँच गया है, यहाँ के मूल निवासी इंडियन कहलाए। चर्च की पहले यह धारणा थी कि इन इंडियनों में आत्मा नहीं होती, इसलिए इनकी हत्या करना या पशुओं की भाँति शिकार कई वर्षों तक न्यायसंगत रहा। लाखों इंडियन मारे गये। अन्त में १५३० में चर्च ने नया आदेश दिया कि अब इंडियन भी मानव माने जायें। यह इंडियन, दासता और हिंसा से भयभीत, विजयी देवताओं की शरण में आए।

कई अमेरिकन इंडियन अपने प्राचीन इतिहास को जानना नहीं चाहते। वह बहुत रोष में हैं, कि उनके पूर्वज हारे। उनके देवताओं ने उनका साथ लड़ाई में क्यों छोड़ा? ऐसे पूर्वजों और देवताओं की अस्मिता वह मिटाना चाहते हैं। उन्होंने अपनी हत्या को विजेता की आत्मा से जोड़ दिया है। ऐसे ही विजेता— ऐसे ग़ाजी— हिन्दुस्तान में भी बहुत हैं।

मानसिक लोक में भी ऐसी अद्भुत कायापलट देखने को मिलती है। यह कहें कि तत्त्वान्तरण के पश्चात मानव नदी के दूसरी ओर के तट पर चला जाता है। यहाँ तक कि कुछ लोग अपनी भाषा, जो उन्होंने पूरे बचपन में बोली थी, भूल जाते हैं।

मैं इस बीच में डुबा देने वाली नदी के उस स्थल को ढूँढ़ता हूँ जहाँ इसके तट कहीं इतने निकट हैं कि हम पार जा पायें!

गर्मी की धुंधलाहट में
यह स्पष्ट नहीं

उस दूर तट पर पेड़ हैं
मनोहर फुलवाड़ियाँ
या मरुस्थल, सूखी झाड़ियाँ
जहाँ लोग तम्बुओं में छिपकर
आराम पाते है ।

पिछली बाढ़ में
सब पुल बह गए
नौकाएँ टूट गई
यह सब मेरे जन्म से पहले हुआ
और अब नदी के उस पार
एक नया शासन है
वहाँ जाना निषिद्ध है ।

मेरे दादा ने मुझे कहानियाँ सुनाई हैं
वह उस पार रहते थे
रामराज्य वहाँ था तब
समय का क्रम अलग था
बाजारों में थी फूलों की सुगंध
रेवड़ी की मीठी वास
बच्चों का पहाड़ा दुहराना
घर से राग का आलाप
नर्तकी के घुंघरू की झंकार
और चौराहे के मन्दिर से चलती
योगी की धुन ।

सुनते हैं अब अद्‌भुत घटनाओं की
लोग तेज घोड़े दौड़ाते हैं ।
शिकार लोकप्रिय है
पशुओं की भगदड़ी से धरती सूख गई है
कभी लोगों का ही शिकार होता है
कल रानी का भाई मरा
आज सामन्तों की फाँसी हुई ।

तीर्थ ध्वंसित पड़े हैं
कैसे नदी के पार पहुँचूँ
घर देख पाऊँ
जहाँ दादा का जन्म हुआ ।

एक ही रास्ता है
वह ऊपर पर्वत की ओर जाता है
पेचीली चढ़ाईयाँ हैं
क्या जंगल से होकर
मैं दादा के घर पहुँच पाऊँगा ?
शिकारी कुत्तों से बचकर
यदि मैं बाजार में आ जाऊँ ?

क्या परदों के पीछे लोग
अब भी गीत सुनते हैं ?
क्या चाह और सूनेपन के बीच
अब भी स्पंदी जादू है ?
क्या आवेश की भूल भुलैया
में कौंने हैं ?
जहाँ पुरानी यादें
अभी सुलग रही हैं ?

निर्वासन

चित्र और संगीत
पुरानी याद दिलाते हैं :
और कभी कूचों से गुज़रते
एक खिड़की से निकली महक
मेरे पांव रोकती है,
और मैं बचपन में लौट जाता हूँ।
उस बंद द्वार के पीछे
और क्या स्मृतियाँ हैं ?

पड़ोसन बुलाती है—
मैं चुप हूँ—
क्योंकि उसका कड़ा पिता
बरामदे से देख रहा है।
आंगन में अलग चौकों की
सुगन्धें मिल रही हैं।

पतझड़ की हवा मुझे हल्के से छूती है,
स्त्रियां ऊखल में धान कूट रहीं हैं।
कुक्कटी अपने चूज़ों को
बाज़ारी कुत्ते से बचा रही है।
और फिर हम जल पर सरकते हैं
हाउज़बोटों के पर्दे के सामने
जिनके पीछे नरम, हरी घास है
ऊँचे चिनार से नीला किलकिला
जल पे कौंधता है,
पोलक पेड़ पर उछलते हैं।
आगे सेब की वाटिका है
और चमकीले सरसों का क्षेत्र।

एक खुले स्थान पर
लड़की मधु बेच रही है।
हमारे मोल-भाव के पीछे हैं
गाय का रम्भाना
बत्तख और कुक्कट का नाद
बच्चों का पहाड़ा दुहराना
हुक्के पर आदमी का खांसना
और चप्पू की आवाज़।

जहाँ से हम निर्वासित हुए हैं—
वही सर्वश्रेष्ठ स्वर्ग है !

निर्वासन

चित्र और संगीत
पुरानी याद दिलाते हैं :
और कभी कूचों से गुज़रते
एक खिड़की से निकली महक
मेरे पांव रोकती है,
और मैं बचपन में लौट जाता हूँ।
उस बंद द्वार के पीछे
और क्या स्मृतियाँ हैं ?

पड़ोसन बुलाती है—
मैं चुप हूँ—
क्योंकि उसका कड़ा पिता
बरामदे से देख रहा है।
आंगन में अलग चौकों की
सुगन्धें मिल रही हैं।

पतझड़ की हवा मुझे हल्के से छूती है,
स्त्रियां ऊखल में धान कूट रहीं हैं।
कुक्कटी अपने चूज़ों को
बाज़ारी कुत्ते से बचा रही है।
और फिर हम जल पर सरकते हैं
हाउज़बोटों के पर्दे के सामने
जिनके पीछे नरम, हरी घास है
ऊँचे चिनार से नीला किलकिला
जल पे कौंधता है,
पोलक पेड़ पर उछलते हैं।
आगे सेब की वाटिका है
और चमकीले सरसों का क्षेत्र।

एक खुले स्थान पर
लड़की मधु बेच रही है।
हमारे मोल-भाव के पीछे हैं
गाय का रम्भाना
बत्तख और कुक्कट का नाद
बच्चों का पहाड़ा दुहराना
हुक्के पर आदमी का खांसना
और चप्पू की आवाज़।

जहाँ से हम निर्वासित हुए हैं—
वही सर्वश्रेष्ठ स्वर्ग है !

श्रीनगर में हिमपात

समाचार मिला कि श्रीनगर में हिमपात हुआ।
नवशीन के उत्सव की बात याद आई :
माँ ने चूल्हे में आग बनाई
वारिमोठ, सूखी सब्ज़ी, और होगाडे पके
खड़ाऊँएं घसीटते
हम आंगन भागे
बर्फगोले फेंकते हुए
और फिर समय हुआ
रिश्तेदारों से पकवानों का विनिमय।

ठिठुरते पांवों को सेकते हुए
हम खिड़की पर बैठे :
हांजिनी सेतु की बर्फ पर
धीरे-धीरे
चल रही थी
कान्दुर से कुल्चे खरीदने
और मज़दूर गा-गा कर
भारी ठेले को धकेल रहे थे
खड्डों के बीच।
नीचे चौके में
मुगल चाय और मीठे कुल्चे
तैयार थे।

शाम को नई कांगड़ियां शुरू हुईं
और पिताजी के आने से पूर्व
बायाजी ने कई कहानियाँ सुनाईं
उधर ह्यद्दी और मां का काम
निरन्तर चलता रहा।

पिताजी आये
मद्धम लाटू के प्रकाश में
दिन का हाल सुना
भोजन खाया
फिर भूसे और राख से
बर्तन साफ करने का समय आया।

पिताजी ने मेरे पांवों को
अपनी कम्बल के तले लिया
और उन्हें अपने पांवों के बीच
गर्म किया।
किसे मालूम था तब
श्रीनगर में तूफान आयेगा
अपने जन्मस्थान के घर
जहाँ मैंने इतनी कौड़ियां खेलीं
मैं लौट न पाऊँगा।

राक्षस चाहते हैं कि हम
अपना अतीत भूल डालें
हमारा जलावतन हुआ
क्योंकि हमें याद है
परदादा की कहानी
हमें याद है
हमारी कहानी।

श्रीनगर में हिमपात

समाचार मिला कि श्रीनगर में हिमपात हुआ।
नवशीन के उत्सव की बात याद आई :
माँ ने चूल्हे में आग बनाई
वारिमोठ, सूखी सब्ज़ी, और होगाडे पके
खड़ाऊँएं घसीटते
हम आंगन भागे
बर्फगोले फेंकते हुए
और फिर समय हुआ
रिश्तेदारों से पकवानों का विनिमय।

ठिठुरते पांवों को सेकते हुए
हम खिड़की पर बैठे :
हांजिनी सेतु की बर्फ पर
धीरे-धीरे
चल रही थी
कान्दुर से कुल्चे खरीदने
और मज़दूर गा-गा कर
भारी ठेले को धकेल रहे थे
खड्डों के बीच।
नीचे चौके में
मुगल चाय और मीठे कुल्चे
तैयार थे।

शाम को नई कांगड़ियां शुरू हुई
और पिताजी के आने से पूर्व
बाबाजी ने कई कहानियाँ सुनाईं
उधर दद्दी और मां का काम
निरन्तर चलता रहा।

पिताजी आये
मद्धम लाटू के प्रकाश में
दिन का हाल सुना
भोजन खाया
फिर भूसे और राख से
बर्तन साफ करने का समय आया।

पिताजी ने मेरे पांवों को
अपनी कम्बल के तले लिया
और उन्हें अपने पांवों के बीच
गर्म किया।
किसे मालूम था तब
श्रीनगर में तूफान आयेगा
अपने जन्मस्थान के घर
जहाँ मैंने इतनी कौड़ियां खेलीं
मैं लौट न पाऊँगा।

राक्षस चाहते हैं कि हम
अपना अतीत भूल डालें
हमारा जलावेवतन हुआ
क्योंकि हमे याद है
परदादा की कहानी
हमें याद है
हमारी कहानी।

अपराजिता

१

बचपन में
महिषासुर की
पौराणिक कथा पढ़ी ।

पर इतिहास चुप है ।
क्या यह प्रसंग भूत का नहीं,
भविष्य का हो ?
विश्वास करो,
प्राचीन ऋषि को
भविष्य का बोध था ।

सत्य है,
प्रचण्ड ज्वाला धधकी
भैंसों ने पहाड़ तोड़े
वह अधिरूढ है ।

२

देवी का परिचय कैसे हो--
कृत्रिममुख,
कीर्तिमुख,
के पीछे ?

क्या रूप बाँध सकता है
अपरिमित को ?

दुर्गा, ललिता,
घोररूपा, भद्रकाली,
अपर्णा,
ब्रह्मवादिनी ।
क्या शब्द बाँध सकता है
अपराजित को ?

एक तरंग
चल पड़ी है ।

तुलमुल में प्रीतिभोज

आभूषित प्रतिमा के आगे
कुण्ड का जल
अदृश्य था
पुष्प और पर्ण वर्षा के तले।

हम जान न पाये
जल का रंग।

जल और अग्नि दो छोर हैं
अनुरूप्य विरोधी
आर्द्र तप में ही सृष्टि होती है
जल में कमल उगता है
महाराज्ञी मुस्कराती है।

विशाल चिनार तले
प्रीतिभोज था।

कुलमाता ने आमन्त्रित किया।

क्या संकल्प था
उस आतिथ्य का?
क्या आज्ञा थी?

संग्राम से पूर्व
अन्जानों का भोज होता है
रणबद्धता के लिये।

उधमपुर में सवेरा

घंटाघर की आधीरात की
चोट के पश्चात
एक चीख
आर्द्र शीत में काँपती पहुँची।

पल गिनने लगा मैं :
दुःख पीड़ा है
स्मृतिभार
ऐकत्य का अभिज्ञान
अनन्यता का अमूर्तन
भविष्य का अनुमान
शब्द का विवेक
ध्यान की सीमा ?

खबरदार, पहरी ने कहा,
जागते रहो !
डंडे का शब्द,
और पहरी के पदपात
खिड़की की सलाकों के बाहर,
बहुत पास से गुजरे।

मैंने पिता से पूछा,
पहरी क्यों जगाता है ?

उसने कहा, कहाँ सुप्त ने कुछ सुना ?
स्वप्नक के दृश्य का आधार यह है,
निर्निद्र का आश्रय।

नगरदीवार से बाहर
बावली के टूटे मन्दिर की
परिक्रमा करके मां लौटी,
प्रभातफेरी के
मधुर गायन के साथ।

सात पुल

सात पुल
भूत और भविष्य के मध्य हैं।

जो बीता है
वह केवल एक संवेदन है,
एक संकेत है।

जो भविष्य है
वह एक वाष्पीय वन है
तपोवन हैं वहाँ
उग्र पशु भी।

सात पुल
दिक् और काल को
बांधते हैं।

उस पार,
धरती निर्वृक्ष हुई
नयी बस्तियाँ उगीं
गोप्रतार विध्वंसित हुये।

बच्चे पुल से कूदते हैं
जानते नहीं,
जल अभी दूषित है।

नगर के पीछे पहाड़ी

रात के अन्तिम पहर का
मिचकाता अन्धेरा और निस्तब्धता—
फिर कोने की कान्दर की दूकान से
दबी आवाज।

पिता, भाई और बहनों के
पदचापों के क्रम में
मेरे पग समाहित हुये।
और फिर दूर से भागते घोड़े की
सड़क पर लोहे की ताल,
और तांगे के पहियों का
कर्कश नाद
ऊँचा होता रहा।
गली के मोड़ से तांगा
अन्धेरे को मन्द लाटू के प्रकाश
के पीछे
चीरता हुआ
हमें नालियों पर विकीर्ण कर
पूर्वापेक्षक गति से
एक और मोड़ पर
अन्तर्धान हुआ।

प्रभात की किरणों से अभिषिक्त
हम पहाड़ी पर चढे।

धीरे, धीरे नगर का अधिक भाग
स्पष्ट हुआ :
सरोवर का विस्तृत जल
वितस्ता का कुण्डलित पथ।

सेतु पर, पेड़ों के पीछे
हमारा घर
छिपा था।

प्रातः की छाया में
स्वर्णलंका और रूपलंका के प्रतिबिम्ब
छिपे थे।

नगर की हिंसक ज्वाला
उगली नहीं थी तब।

घाटी में टूटा विमान

पर्वतद्वार की ऊँचाई से
मैंने घाटी में खण्डित विमान देखा।

अपराह्न की आंखमिचौनी खेलती धूप
भूर्जजंगल का शब्द
वनपुष्पों की सुरभि
लकड़हारे के प्रहार की गूंजन
चरवाहे का नाद
पहाड़ी बेरों का स्वाद
कुल्या का कल कल
निरन्तर पदचाप,
और थी एक गहन उत्कण्ठा।

नीचे, उज्ज्वल गोचर के टीले पर
खण्डित, कालिखी प्रस्तर पाये,
नीले आश्मन के काले अंश।

गुज्जर ने कहा :
यह अन्य सभ्यता के अवशेष हैं।

यह अग्नि और काल का क्रम है :
अपने ही बन्धुओं से
हम अनजान हैं।

बादल फूटा

एक युग था—
जीवन की दौड़ की निराशा,
बिछुड़ना,
आयु के अत्याचार,
यही दुःख थे।

फिर पहलगाम में बादल फूटा।
बीस बच्चे बह गये।

एक आँधी आई
हमारे घर राख हुये।

पुराने शिष्यों ने
गोलियों से वार किया।
यारों की आंखें
खूंखार हो गयीं।

अब स्मृति भ्रष्ट हुई है,
यारबल देखे वर्ष हो गये
कैसे हम नदी पार कर
लौटेंगे?

पुष्प और अग्नि

पुष्प और अग्नि
साथ, साथ जाते हैं।
अग्नि पुष्प को खिलाती है
फिर जलाती है।

अग्नि काल है
दृष्टि है,
सुगन्ध है।

चन्द्रमा और जल पुष्प हैं
पुष्पमान प्रजावान पशुमान भवति।
यही वेद है।

अग्नि श्वास है
शरीर पुष्प है,
वेदि है,
आयतन है।

प्रतीक्षाकक्ष

हर दिन
कल की प्रतीक्षा है ।

हम रुके हैं
चमत्कार के लिये
बिजली के प्रहार के लिये ।

यात्रा ही लक्ष्य है ।

प्रतीक्षाकक्ष की व्रजसुन्दरी
के मोहाधीन
निमेष एक युग है,
दिक्काल की सापेक्षता स्पष्ट है ।

हा उहा उहा उ ।

उड़ने का भय

पिंजडे में पोषित पक्षी
उड़ना कैसे सीखता है ?

उसने कभी
अन्य पक्षी को नहीं देखा,
मच्छर से डरता है !

क्या तृणजलायुका को आभास है
वह तितली बनेगी ?

क्या उड़ने का भय
हमारी अनभिज्ञता है ?

हिमानी आँधी

कल रात
पहाड़ की ऊंची घाटी में
हिमानी आँधी आयी।
बहुत बिजली चमकी,
और घर के लाटू
बुझ गये।

आज सवेरे
केवल धरती के पेट में
उष्णता है—
नाग से पानी भरकर
युवतियाँ हिमपथ पर
पंक्ति में चल रही हैं।

लकडहारे प्रस्थान कर गये हैं
जंगल को।
जब तक इन्धन आयेगा,
हम कम्बलों से आवरित होकर
स्मृति की आग में
तप रहे हैं।

नदी और विदूषक

ज्येष्ठ के मध्याह्न की धूप में
मिसिसिपी के सेतु पर
सीढ़ियों पर बैठे हुये
भींची आँखों के रेखाछिद्र के पीछे से
गाढ़ा, मटियाला जल
कुछ वितस्ता जैसा था,
कुछ डल जैसा विस्तृत।

पर छत्र की छाया में
चिनार का शीतल चैन कहाँ?
न ही सन्तोष
नदी में खेलते बच्चों का।

मिसिसिपी के जल को छूना निषिद्ध है।
सो न्यू आर्लियन्स के विदूषक
नदी के परे खेल दिखाते हैं।
उनके रंगे मुख पर दुःख अंकित है
उनकी आंखे टटोल रही हैं
अपने देश के पर्यटक।

नगर के तंतु

आवाज़ें बांधती हैं
हवा की महक
पटरी के विक्रेता का स्वागत
श्रमिकों का गायन।

यह चाह किसके लिये है,
कहाँ तक पहुँचेगी यह ?

स्तुतियाँ समान हैं
हृदय संगठित
पर यह ज्वाला
नगर की शोभा होगी
अथवा तंतुओं को राख करेगी ?

तंतु पितरों से बंधे हैं—
मुखिया कई डोरियां संभालता है
उसके चित्र दीवारों पर चिपके हैं
दूरदर्शन और रेडियो उसकी गाथा गाते हैं।

मुखिये की आकांक्षा अपरिमित है
वह इतिहास बदलना चाहता है।

क्या तंतु सिकुड़ते हैं
ठीक भी हो सकते हैं ?

अन्त में नगर दब जाते हैं,
कहानियां हमारी जान हैं
यह कहानियां मरुस्थल की आंधी में
विस्मृत हो जाती हैं।

चलो, हाथ पकड़ें
इस मांस की रस्सी में
गरमाहट तो है
इस डोर से
सूक्ष्म तंतु भी कदाचित दृढ़ हो जायें।

शिशिर और यक्ष

१

शिशिर के कई रूप हैं।
एक कठोर है
जिसमें अकेलापन है,
उजड़न भाव।
ओवरकोट और कनटोपी में छिपे
सुनसान पटरियों पर भागते
भूतल रेलगाड़ी के स्टेशन पर,
ऊपर सड़कों पर
कारों की निरन्तर दौड़,
या हम डालर का सोचते हैं,
या मृत्यु का।

ऐसे शिशिर में
यक्ष चावल-मछली खाने नहीं आते।

२

नगर की कोठियों में हम अलग हैं
रीतियां निरर्थक हैं,
काम का यह वृत्त है।

३

यक्ष प्राचीन गलियों में वास करते हैं
धन ही नहीं,
स्मृति की भी रक्षा करते हैं।
क्या स्मृति बांधने से
यह नष्ट हो सकती है?

४

धर्म का अर्थ क्या है?
स्मृति, रुचि
फिर उत्साह, उत्थान और पराक्रम
प्रज्ञा और सत्य का साक्षात्कार।

५

ज्वाला का संस्कार राख है
राख से शौच होता है
यक्ष भोज की थाली को भी
हम राख से स्वच्छ करते हैं।

शिशिर और यक्ष

१

शिशिर के कई रूप हैं।
एक कठोर है
जिसमें अकेलापन है,
उजड़न भाव।
ओवरकोट और कनटोपी में छिपे
सुनसान पटरियों पर भागते
भूतल रेलगाड़ी के स्टेशन पर,
ऊपर सड़कों पर
कारों की निरन्तर दौड़,
या हम डालर का सोचते हैं,
या मृत्यु का।

ऐसे शिशिर में
यक्ष चावल-मछली खाने नहीं आते।

२

नगर की कोठियों में हम अलग हैं
रीतियां निरर्थक हैं,
काम का यह वृत्त है।

३

यक्ष प्राचीन गलियों में वास करते हैं
धन ही नहीं,

स्मृति को भी रक्षा करते हैं।
क्या स्मृति बांधने से
यह नष्ट हो सकती है?

४

धर्म का अर्थ क्या है?
स्मृति, रुचि
फिर उत्साह, उत्थान और पराक्रम
प्रज्ञा और सत्य का साक्षात्कार।

५

ज्वाला का संस्कार राख है
राख से शौच होता है
यक्ष भोज की थाली को भी
हम राख से स्वच्छ करते हैं।

डूबने से बचना

१

यारबल पर
सब बन्धन मिथ्या हैं।

चिनारों के तले
बच्चों का चंचल धावन
उपकुल्या के पत्थर पर
मेरा पांव फिसला
एक अन्जाने ने
जल से निकाला।
कितनी बार जीवनदान मिला है!

२

अभयदान शब्दों में नहीं
मुद्रा में नहीं
संयोग की बात है।
तभी तो कहते हैं
ऋषि, मुनि सनकी हैं।

३

दूसरे के सिवा
कोई गुरु नहीं।
तभी तो जल में कूदने की चाह है।

वेदना का तीव्र होना
यह पहचान है
कि कोई साथी नहीं।
अन्धेरे को चीरती हुई
रेलगाड़ी की यात्रा—
डिब्बा ही पूरा जगत है तब,
चमकते बिजली के लाटू के नीचे,
पंखे से पसीना सुखाते हुये
सबको इन्तजार है
पहुंचने का।

४

पहुँचना एक पहेली है।
डूबने से बच नहीं सकते—
प्रीति नहीं
परिवर्तन है।
कभी रेलगाड़ी की सीटी
यह याद दिलाती है।

डूबने से बचना

१

यारबल पर
सब बन्धन मिथ्या हैं।

चिनारों के तले
बच्चों का चंचल धावन
उपकुल्या के पत्थर पर
मेरा पांव फिसला
एक अन्जाने ने
जल से निकाला।
कितनी बार जीवनदान मिला है!

२

अभयदान शब्दों में नहीं
मुद्रा में नहीं
संयोग की बात है।
तभी तो कहते हैं
ऋषि, मुनि सनकी हैं।

३

दूसरे के सिवा
कोई गुरु नहीं।
तभी तो जल में कूदने की चाह है।

वेदना का तीव्र होना
यह पहचान है

कि कोई साथी नहीं।
अन्धेरे को चीरती हुई
रेलगाड़ी की यात्रा—
डिब्बा ही पूरा जगत है तब,
चमकते बिजली के लाटू के नीचे,
पंखे से पसीना सुखाते हुये
सबको इन्तजार है
पहुंचने का।

४

पहुँचना एक पहेली है।
डूबने से बच नहीं सकते—
प्रीति नहीं
परिवर्तन है।
कभी रेलगाड़ी की सीटी
यह याद दिलाती है।

रजोमेघ

उपवन में घास मर गई।
पेड़ के नीचे हांफता, बाज़ारी कुत्ता
पत्ते चबा रहा है।
सब सुन्न है
छप्पर के नीचे मोची की
ठकठक के सिवा।

दूर एक छाया है
यहां घुटन है
ऐकल्य का विस्तार
उड़ने का भय।

अक्षालित वस्त्र पहनकर
मैं टहलता हूँ बाज़ार में।
रजोमेघ विशाल हुआ।

कपोतरंगीय वात में
आँधी की प्रतीक्षा की,
इस तिमिर में
पहली वर्षा हुई।

स्पर्श

मरुस्थल में हमारे पदचिह्न ही
हमारे संस्कार हैं।

सरोवर में नौका
कमलकुंज के पास
पहुँचाती है।
कमल का जल से स्पर्श नहीं,
हमारा कमल से नहीं।
हाथ फैलाने से
नौका उलट सकती है।

भूल और उसका दोहराना
संस्कार बन गये।

रेखा गहरी होते ही
पथ का माप बन गयी।

आकार से नाम सूझा—
पुष्प याद दिलाते हैं—

जब स्पर्श हुआ
फिर वेदना हुई
और तृष्णा और उपादान।

पञ्चालदेव

१

पञ्चालदेव की चोटी
एक तुला है।

एक ओर सुन्दर कुल्यायें,
दूसरी ओर गहन खाइयां।

यहाँ आवेश, वहां आलस्य।
यहाँ धूर्तता,
वहाँ रीतियों का भार।
यहाँ संहार,
वहाँ अनादर।

सर्पिल पथ पर चल चल कर
तुम्हारे धामन् से दूर
हम अपनी चतुराई
भूल बैठे।

२

क्या पर्वत पर देदीप्यमान नगर
अभी खड़ा है?
और शिव-पार्वती का विवाह
राज्ञी की आरती
सन्ध्या में नौका भ्रमण—
यह सब होते है?

३

हमारी भूल क्या है,
कैसा उल्लंघन?
यह कि हम उस नगर को
भूल न पाये।

चीत्कार और सिसकियां

वह चैत्र पिछले जैसा ही था।
घाटी में एक भयानक सौंदर्य
निखर आया था।
घर जले पड़े
मन्दिर विध्वंस हुए थे अभी भी,
विमान के बिखरे पत्थर
सहमे हुए थे हिम प्रस्तर के नीचे।
गली से खड़ाऊँ की खटखट
और छत से फिसली बर्फ का
आंगन में धम से गिरना,
हमारा निरंतर संलाप—
पिंजड़े के पक्षियों की ध्वनि जैसा—
कुछ सहारा थे।
कुछ संतोष था
शिशिर की कांगड़ी का संसर्ग।
वाटिका के नग्न, विस्मित पेड़ों के पीछे
कव्वों के कांव-कांव के मध्य
हम कुल्या के हिम्य जल में
थालियां धो के लाए थे।
रात्रि ने चादर पूरी नहीं ओढ़ी थी,
बाज़ारी कुत्ते अपने अन्न की भीख के लिए
घर नहीं पहुंचे थे
एक विचित्र पदचाप हुई
दीपक बुझे,
द्वार पर प्रहार हुआ।
घर के पुरुष बाहर निकले।
कुछ समय पश्चात,
गोलियों का शब्द हुआ।
संग्रामपुर में फैल गया
एक भयंकर चीत्कार।
निर्दयी भूमि है यह,
इसके वक्ष में
सिसकियां भी उभरती नहीं।
देवता हमें भूल चुके हैं।
न है राग, न वेदना
स्मृति भी धुंधला रही है।

चीत्कार और सिसकियां

वह चैत्र पिछले जैसा ही था।
घाटी में एक भयानक सौंदर्य
निखर आया था।
घर जले पड़े
मन्दिर विध्वंस हुए थे अभी भी,
विमान के बिखरे पत्थर
सहमे हुए थे हिम प्रस्तर के नीचे।
गली से खड़ाऊँ की खटखट
और छत से फिसली बर्फ का
आंगन में धम से गिरना,
हमारा निरंतर संलाप—
पिंजड़े के पक्षियों की ध्वनि जैसा—
कुछ सहारा थे।
कुछ संतोष था
शिशिर की कांगड़ी का संसर्ग।
वाटिका के नग्न, विस्मित पेड़ों के पीछे
कव्वों के कांव-कांव के मध्य
हम कुल्या के हिम्य जल में
थालियां धो के लाए थे।
रात्रि ने चादर पूरी नहीं ओढ़ी थी,
बाज़ारी कुत्ते अपने अन्न की भीख के लिए
घर नहीं पहुंचे थे।
एक विचित्र पदचाप हुई
दीपक बुझे,
द्वार पर प्रहार हुआ।
घर के पुरुष बाहर निकले।
कुछ समय पश्चात,
गोलियों का शब्द हुआ।
संग्रामपुर में फैल गया
एक भयंकर चीत्कार।
निर्दयी भूमि है यह,
इसके वक्ष में
सिसकियां भी उभरती नहीं।
देवता हमें भूल चुके हैं।
न है राग, न वेदना
स्मृति भी धुंधला रही है।

ताल

हाथ का शब्द
शब्द के गर्भ में ही
जाना जा सकता है।

पहला शब्द
जंगल के सन्नाटे को चीरता
चीख जैसा था।

चीख में भय है
भय ही गुरु है—
यम सर्वोत्तम।

जो चीख वक्षस्थल में दबी है
उसे पहचानना ज्ञान है।

प्रभात

प्रातः की झिलमिली छाया में
सूत्र द्योतित करते हैं
स्मृति की भूल भुलैया को ।
प्रतीक पर आश्रित है
माया का दैनिक सृजन ।
बिन सोच के
प्रकृति वेश बदलती है
चिदाकाश में प्रभात होता है ।

संस्कार

ठिठुरती सरदी में भी
पक्षी तार पर अलग बैठता है।
इसकी दृष्टि सम्यक है,
या भूख से पीड़ित है यह,
किसको मालूम ?

सुना था,
अभ्यास से राग मिट जाता है
पर मोह एक ऐसा धर्म है
जो रुचि को दृढ़ करता है,
उत्साह बढ़ाता है,
अन्धेरे में प्रवेश से पहले।

यह चार दिन
बीती की याद दिलाते हैं,
कहां था, क्या हुआ,
पक्षी तब भी अकेला था
समुद्र लांघने का इसका क्रम
कितना नित्य है ?
मिट्टी में स्मृति नहीं
पर मांस में है।

दो पक्षी

सोचने का धैर्य कहाँ,
जब भी दूसरे को देखूँ
एक परछाईं सी टोकती है :
सब द्वार खुले हैं अब तक
हृदय के आङ्गन के
जहाँ पहले की तरह दो पक्षी
अब भी शाखा पर बैठे हैं, वहीं।
स्मृतियाँ चीख उठती हैं
जैसे एक छोटा बालक
अनजान छाया देखकर
अपनी मां को पुकारे।
वहाँ गली में नई आवाज़ें हैं—
कौन आयेगा ?

खेल ऐसा है
कि बालक केवल नाम याद रखता है,
चाहत इतनी है
कि गोटों को मुट्ठी में पकड़ता है।
इन विचारों में लिपटा
मैं दर्पण में दूसरे को देखूँ।
पदचिह्न दिखायेंगे
कि कहाँ लौट जाना है।

प्रहेलिकायें

मैं, जो यह गीत गा रहा हूँ,
कल अपने शब्द भी पहचान न पाऊँगा
इस स्वर का जादू मिट गया होगा
निस्तब्ध अपने को टटोलते हुये
बिन भूत, भविष्य या कब :
यह योगी कहते हैं। मेरा अपना विश्वास है
कि मैं स्वर्ग या नरक का अधिकारी नहीं।
भविष्यवाणी न हो : हर एक की कहानी
घुल जाती है अंगराग की भांति।
फलक पर केवल एक अक्षर है
और कुछ निमेष बंधे हुये
जिनसे अतीत की कसक होती है।
वैभव और प्रताप की अन्धी कौंध के आगे
मृत्यु का अनुभव कैसे होगा?
क्या स्फोटित विस्मृति पी पाऊँगा मैं
ताकि अनन्तकाल तक रहूँ; पर कभी न रहा हूँ।

हमारा देश

इतिहास-पुराण में वर्णित
कहां है अपना देश ?
दिशायें विस्तृत हुईं
क्षेत्र बदल गया ।
घर के आंगन में पहले पग चले
जहां पिता ने चिड़िया के गान का
अर्थ बताया
अब हम सुदूर घाटियों में
पुराने गीत गाते हैं ।
यह सारा क्षेत्र ही है हमारा देश ।

सीमा

जो पथ सूर्यास्त में छिप गये
उनमें से कई
मैं फिर नहीं देख पाऊँगा।
सूर्य फिर उगेगा
पर मेरा पथ अनजान नियम से
बँधा है।
कौन मेरे भय को देख
मुस्करा रहा है?

कितनी विदाई करूँ
और किससे करूँ
मैं यह नहीं जानता
कौन मिलन अन्तिम है।

कितने द्वार वर्जित हो गये
अब तक

दिक्काल की कई परतें
ह्रास हो चुकी हैं।

मृत्युशय्या

मृत्यु एक रहस्य है
जिसे मैं व्यर्थ नाम से बाँधता हूँ।

जीवन एक बाँध है
और मृत्युशय्या पर बाँध की दरारें
दीखती हैं,
बीते दिनों का आभास,
कुछ क्षण।
एक आशा उठती है
कदाचित स्मृति का सीमेंट
बांध की दरारों को जोड़ लेगा।

पुष्पों से छिपे शव को देखकर
विचार उठता है
हर क्षण
रंगे कागद पर नल की बूँदों की तरह
भीतर चित्र मिटाता है।

शब्द व्यर्थ हैं
जब हम रो सकते हैं,
पर मां की गोद का
चैन कहाँ।
केवल बीते दिन की सुगन्ध
बची है।

प्रेम की आकांक्षा

न तुम्हारी दृष्टि का अंतरंग
न ही शरीर का हिल्लोल
उपहार हैं ।
वह है जब शिशुसमान
निर्भय
तुम लेटी हो
मौन समेटे
प्रेम से मुक्त
मुझ से मुक्त
काल के पार ।

मेरा जीवन

प्रत्येक रात एक पड़ाव है,
इसके पहले का व्यापार
इतना दूर लगता है
जैसे एक चौड़ा सागर
बीच खिंचा हो
जिसे काले जादू से ही
पार किया जा सकता।

पुराने संग्राम के चलचित्र
अब निर्जीव छाया हैं
केवल एक निमेष है
जो अब है
कभी स्पष्ट, कभी भयभीत।
नये व्यापार की
योजना बनाता हूँ।

दर्पण

दर्पण में कई पशु
अपने को पहचानते नहीं।
मानव पहचानते तो हैं
पर प्रत्येक असन्तुष्ट है
अपने रूप से।

दर्पण से पहले का क्षेत्र
भाव और भावना का लोक है
त्रिशंकु का।
रूप की विचित्रता से लज्जा निकलती है।

नदी का काँपता तल
और तलवार भी दर्पण हैं।
अस्तित्व मिटाकर ही तो
अपने को जाना जाता है।